No. of Printed Pages : 7

MSK–001

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.एस.के.-001 : संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

समय : 3 घण्टे अधिकतम अंक : 100

नोट : *सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

भाग—क

1. अधोलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** की विस्तृत व्याख्या कीजिए : 20

(क) वाक्यस्वरूपमाह-वाक्यं स्याद् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः। योग्यता पदार्थानां परस्परसंबन्धे बाधाभावः।

पदोच्चयस्यैतद्भावेऽपि वाक्यत्वे वह्निना सिञ्चति इत्याद्यपि वाक्यं स्यात्। आकाङ्क्षा प्रतीतिपर्यवसानविरहः। स त्व श्रोतुर्जिज्ञासारूपः। निराकाङ्क्षस्य वाक्यत्वे 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इत्यादीनामपि वाक्यत्वं स्यात्। आसत्तिर्बुद्ध्याविच्छेदः। बुद्धिविच्छेदेऽपि वाक्यत्वे इदानीमुच्चारितस्य देवदत्तशब्दस्य दिनान्तरोच्चारितेन गच्छतीति पदेन सङ्गतिः स्यात्। अत्राकाङ्क्षायोग्यतयोरात्ममार्थ-धर्मत्वेऽपि पदोच्चयधर्मत्वमुपचारात्। वाक्योच्चयो महावाक्यम्- योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्त इत्येव।

(ख) ननु कश्चिदेवांशोऽत्र दुष्टो न पुनः सर्वोऽपीति चेत्, तर्हि यत्रांशे दोषः सोऽकाव्यत्वप्रयोजकः, यन्त्र ध्वनिः स उत्तमकाव्यत्वप्रयोजक इत्यंशाभ्यामुभयत आकृष्यमाणमिदं काव्यमकाव्यं वा किमपि न स्यात्। न

च कञ्चिदेवांशं काव्यस्य दूषयन्तः श्रुतिदुष्टादयो दोषाः, किं तर्हि सर्वमेव काव्यम्। तथाहि-काव्यात्मभूतस्य रसस्यानपकर्षकत्वे तेषां दोषत्वमपि नाङ्गीक्रियते। अन्यथा नित्यदोषानित्यदोषत्वव्यवस्थाऽपि न स्यात्। यदुक्तं ध्वनिकृता ''श्रुतिदुष्टादयो दोषा अनित्या ये च दर्शिताः। ध्वन्यात्मन्येन शृङ्गारे ते हेया इत्युदाहृताः।'' किञ्च एवं काव्यं प्रविरलविषयं निर्विषयं वा स्यात् सर्वथा निर्दोष-स्यैकान्तमसंभवात्।

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद! प्रियायाः
सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या।।

(ख) वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्जोत्तराशां

सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्ययिन्याः।

विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां

लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि।।

(ग) विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः

सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।

अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः

प्रासादास्त्वं तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः।।

(घ) तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी

मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।

श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां

या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्यैव धातुः।।

3. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** का हिन्दी भाषा में अनुवाद कीजिए : $2\times10=20$

(क) सत्यं न मे विभवनाशकृतास्ति चिन्ता,

भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।

एततु मां दहति नष्टधनाश्रयस्य,

यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति।।

(ख) कामं नीचमिदं वदन्तु पुरुषाः स्वप्ने च यद्वर्धते

विश्वस्तेषु च वञ्चनापरिभवश्चौर्य न शौर्य हि तत्।

स्वाधीना वचनीयतापि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलि-

र्मार्गोह्येष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्व कुतो द्रौणिना।।

(ग) शिरो मुण्डितं तुण्डं मुण्डितं चितं

न मुण्डितं किमशा मुण्डितम्।

यस्य पुनश्च चित्तं मुण्डितं साधु

सुष्ठु शिरस्तस्य मुण्डितम्।

(घ) सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।

पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणः।

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

$2 \times 10 = 20$

(i) नान्दी का लक्षण देते हुए उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।

(ii) नायिका का लक्षण देते हुए उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

(iii) 'मृच्छकटिकम्' में वर्णित समाज का चित्रण कीजिए।

(iv) 'मेघदूतम्' के प्रकृति-चित्रण पर निबन्ध लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(i) रस का स्वरूप

(ii) धीरललित नायक

(iii) मुख सन्धि

(iv) अर्थप्रकृति

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का चरित्र-चित्रण कीजिए :

$2 \times 5 = 10$

(i) यक्ष का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ii) शकार का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(iii) वसन्तसेना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(iv) मेघ के मार्ग का वर्णन कीजिए।

× × × × ×